विकसित भारत के निर्माण में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका

कैप्टन (डॉ.)सुनीता देवी
विभागाध्यक्ष – अर्थशास्त्र , देवता महाविद्यालय मोरना
बिजनौर, उत्तर प्रदेश, भारत
drsunita1980@gmail.com

Accepted: 06.03.2023 **Published**: 10.04.2023

सार
यह शोध भारत को एक विकसित भविष्य की ओर ले जाने में भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की गहन भूमिका की जांच करता है। प्राचीन ज्ञान में निहित और समग्र स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक–सांस्कृतिक विकास जैसे क्षेत्रों में फैला हुआ, आईकेएस एक अद्वितीय प्रतिमान प्रदान करता है जो पारंपरिक ज्ञान को समकालीन जरूरतों के साथ जोड़ता है। मानकीकरण, आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकरण और बौद्धिक संपदा मुद्दों जैसी चुनौतियों के बावजूद, आईकेएस में व्यापक क्षेत्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने की क्षमता है। यह प्रभाव पारंपरिक चिकित्सा, कृषि और शिल्प द्वारा संचालित आर्थिक विकास से लेकर सामाजिक एकजुटता और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने तक है। इसके अलावा, आईकेएस में निहित स्थायी प्रथाएं पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। शोध आईकेएस की पूर्ण क्षमता का दोहन करने में सामुदायिक भागीदारी, नीति निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर चर्चा करता है। यह इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कैसे आईकेएस नवाचार और अनुसंधान के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है, एक ऐसे विकास पथ को बढ़ावा दे सकता है जो न केवल तकनीकी रूप से उन्नत है बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध और टिकाऊ है। पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रथाओं में शामिल करके, भारत एक ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है जो वैश्विक प्रगति को अपनाते हुए अपनी समृद्ध विरासत का सम्मान करेगा।

मुख्य शब्दः भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), समग्र स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्थिरता, सामाजिक–सांस्कृतिक विकास, पारंपरिक चिकित्सा, बौद्धिक संपदा, नवाचार और अनुसंधान, सामुदायिक भागीदारी, नीति निर्माण

1. परिचयः

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक ज्ञान का व्यवस्थित हस्तांतरण है। यह एक परंपरा के बजाय एक संरचित प्रणाली और ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली वैदिक साहित्य, उपनिषद, वेद और उपवेद पर आधारित है। एनईपी–2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विचार की इस समृद्ध विरासत को एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में मान्यता देती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन शामिल हैं जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित हुए हैं। मान्य करने और व्यवहार में लाने की इस परंपरा ने हमारी शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, विनिर्माण और वाणिज्य को प्रभावित किया है। इसने भारत की शास्त्रीय और अन्य भाषाओं को प्रभावित किया है, जो पाठ्य, मौखिक और कलात्मक परंपराओं के माध्यम से प्रसारित हुईं। इसमें प्राचीन भारत का ज्ञान, उसकी सफलताएँ और चुनौतियाँ, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और वास्तव में जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की भावना शामिल है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के उद्देश्यः

भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास जैसे कई क्षेत्रों में समकालीन सामाजिक मुद्दों को हल करने के लिए आगे के शोध का समर्थन और सुविधा प्रदान करना है। अतीत से प्रेरणा लेने और भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान हस्तांतरण की निर्बाध परंपरा और अद्वितीय दृष्टिकोण (भारती दृष्टि) द्वारा प्रस्तुत हमारी प्राचीन ज्ञान प्रणाली का उपयोग करके भारत और दुनिया की समकालीन और उभरती समस्याओं को हल करना है।

आईकेएस सेलः

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) एआईसीटीई, नई दिल्ली में शिक्षा मंत्रालय (एमओई) के तहत एक अभिनव

सेल है। इसकी स्थापना आईकेएस के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, आगे के शोध और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए आईकेएस को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए की गई है। यह कला और साहित्य, कृषि, बुनियादी विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, वास्तुकला, प्रबंधन, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र में हमारे देश की समृद्ध विरासत और पारंपरिक ज्ञान को फैलाने के लिए सक्रिय रूप से संलग्न होगा।

आईकेएस प्रभाग के कार्यः

आईकेएस प्रभाग का मुख्य कार्य विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं और विभिन्न मंत्रालयों सहित भारत और विदेशों में विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए आईकेएस आधारितध्संबंधित अंतर और ट्रांस अनुशासनात्मक कार्यों को सुविधाजनक बनाना और समन्वयित करना और निजी क्षेत्र के संगठनों को इसके साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करना है। दूसरा विषय–वार अंतःविषय अनुसंधान समूहों की स्थापना, मार्गदर्शन और निगरानी करना है जिसमें संस्थानों, केंद्रों और व्यक्तियों के शोधकर्ता शामिल होंगे। इसके अलावा, लोकप्रियकरण योजनाएं बनाना और बढ़ावा देना, विभिन्न परियोजनाओं के वित्त पोषण की सुविधा प्रदान करना और अनुसंधान करने के लिए तंत्र विकसित करना और आईकेएस को बढ़ावा देने के लिए जहां भी आवश्यक हो नीति सिफारिशें करना।

दृष्टिः

'भारतीय ज्ञान प्रणाली' के सभी पहलुओं पर अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देना, आगे के अनुसंधान और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' को संरक्षित और प्रसारित करना।

उद्देश्यः

उन व्यक्तियों और संगठनों का एक डेटाबेस बनाएं जिन्होंने कला, संगीत, नृत्य, नाटक से लेकर गणित, खगोल विज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, जीवन विज्ञान तक प्राचीन और समकालीन समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली के अनुसंधान, शिक्षण, प्रकाशन और संरक्षण के माध्यम से योगदान दिया है। पर्यावरण और प्राकृतिक विज्ञान, स्वास्थ्य देखभाल, योग, कानून, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, प्रबंधन, भाषाविज्ञान, भारत की मौखिक परंपराएं, संस्कृत, प्राकृत, तमिल, पाली आदि में छिपा ज्ञान।

इस समृद्ध ज्ञान के अभिलेखन और प्रसार के लिए एक पोर्टल बनाएं और एक खुला पोर्टल भी बनाएं और इसे पीपीपी मोड में विकी की तरह गतिशील और जीवंत रखें।

समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास सहित कई क्षेत्रों में आज सामने आने वाली सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए आगे के शोध को बढ़ावा देना और सक्षम बनाना।

आईकेएस के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले विद्वानों और संस्थानों और उनके कार्यों की पहचान करना और प्रमुख क्षेत्रों को वर्गीकृत करना।

आईकेएस में योगदान देने वाले सभी लोगों द्वारा किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्राप्त करना और नियमित प्रकाशन निकालना।

अवधारणाओं का प्रमाण, नए ज्ञान सृजन, समाज के लिए उपयोगी प्रभावी अंतःविषय कार्य प्रदान करने के लिए आईकेएस में अनुसंधान को बढ़ावा देना।

आईकेएस के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए अनुसंधान गतिविधियों, कार्यशालाओं, सेमिनारों और प्रकाशनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना। स्कूल और उच्च शिक्षा में पेश किए जाने वाले ज्ञान के आधुनिक विषयों की पाठ्य पुस्तकों और संदर्भ पुस्तकों में आईकेएस को एकीकृत करने के उपाय सुझाना।

एमओई के तहत सामान्य विश्वविद्यालयों, संस्कृत विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों में आईकेएस सेल स्थापित करना। आधुनिक धाराओं और प्राचीन शास्त्रों से जुड़े अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा मंत्रालय (एमओई), अन्य मंत्रालयों, विभागों, स्वतंत्र विद्वानों, गैर सरकारी संगठनों और आईकेएस के क्षेत्र में काम करने वाले निजी संस्थानों के बीच सहयोगध्समन्वय शुरू करना।

जहां भी संभव हो, पीपीपी मॉडल का पता लगाना और उसे अपनाना (उदाहरण के लिए एक विकी प्रकार का मंच और व्यापक आईकेएस पोर्टल बनाना)।

आईकेएस प्रभाग के उद्देश्यों की योजना बनाने, क्रियान्वयन और देखरेख करने के लिए विशेषज्ञ समूहों और समितियों का गठन करना।

आईकेएस के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कोई भी कदम, कार्य, परियोजना या गतिविधि उठाना।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत विषयः

मानविकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कृषि, सामुदायिक ज्ञान प्रणाली, ललित और प्रदर्शन कला, व्यावसायिक कौशल, आदि, जिनमें आईकेएस सामग्री है।

दिशानिर्देशों के अनुसार, पाठ्यक्रमों में रसायन विज्ञान, गणित, भौतिकी, कृषि आदि जैसे आधुनिक विषयों के साथ आईकेएस में पारंपरिक विषयों की स्पष्ट मैपिंग होनी चाहिए।

2. शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालीः

आईकेएस को स्कूल और उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तरीके से पेश किया जाएगा। आईकेएस में आदिवासी ज्ञान के साथ–साथ स्वदेशी और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियां शामिल होंगी जिसमें गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, खेल, साथ ही शासन, राजनीति और शामिल होंगे। आदिवासी जातीय–औषधीय प्रथाओं, वन प्रबंधन, पारंपरिक (जैविक) फसल की खेती, प्राकृतिक खेती आदि में विशिष्ट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाएंगे। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम वैकल्पिक के रूप में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए भी उपलब्ध होगा।

नीति मानती है कि भारत की समृद्ध विविधता का ज्ञान शिक्षार्थियों को सीधे तौर पर ग्रहण करना चाहिए। इसमें सरल गतिविधियाँ शामिल होंगी, जैसे देश के विभिन्न क्षेत्रों में छात्र भ्रमण। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा बल्कि भारत की विविधता, संस्कृति और परंपराओं के साथ–साथ देश के विभिन्न हिस्सों के बारे में जागरूकता और सराहना विकसित करने में भी मदद मिलेगी। इस दिशा में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत देश में 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी जहां शैक्षणिक संस्थान छात्रों को इन स्थलों और उनके इतिहास, वैज्ञानिक योगदान, परंपराओं, स्वदेशी साहित्य और ज्ञान आदि का अध्ययन करने के लिए भेजेंगे। इन क्षेत्रों के बारे में उनके ज्ञान को बढ़ाने का एक हिस्सा।

वर्तमान में, आईकेएस के मूल अनुसंधान, शिक्षा और प्रसार को उत्प्रेरित करने के लिए 32 आईकेएस केंद्र स्थापित किए गए हैं। प्राचीन धातुकर्म, प्राचीन नगर नियोजन और जल संसाधन प्रबंधन, प्राचीन रसायनशास्त्र आदि परियोजनाओं जैसी चल रही 75 उच्च अंत अंतर–विषयक अनुसंधान सुविधाएं स्थापित की जा रही हैं। आईकेएस पर लगभग 5200 इंटर्नशिप की पेशकश की गई है। 50 संकाय विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए। 8000 से अधिक एचईआई ने अपने पाठ्यक्रम में आईकेएस को अपनाना शुरू कर दिया है और 1.5 लाख पुस्तकों के डिजिटलीकरण पर काम किया है।

आईकेएस डिवीजन ने समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा की स्थापना के लिए एक रोडमैप दस्तावेजीकरण करते हुए विजन 2047 विकसित करने के लिए विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के अग्रणी विचारकों और अभ्यासकर्ताओं को एक साथ लाया है। हमारे विशाल ज्ञान से सीख लेकर, हमारे वर्तमान समय की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आगे के शोध को बढ़ावा देना और सक्षम बनाना आसान होगा। इन पाठ्यक्रमों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने से हमारी शिक्षण प्रणाली की विरासत को संरक्षित करते हुए प्रेरणा मिलेगी। पारंपरिक और समकालीन दोनों अवधारणाओं के संपर्क के माध्यम से, छात्र अपनी संस्कृति की बेहतर समझ हासिल कर सकते हैं, अपने बौद्धिक विकास का विस्तार कर सकते हैं और अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं।

समसामयिक समय में 3 भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ वर्तमान स्थिति

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) का समकालीन परिदृश्य आधुनिक प्रथाओं के साथ जुड़े पारंपरिक ज्ञान की एक टेपेस्ट्री को दर्शाता है। विशेष रूप से, इन प्रणाली द्वारा प्रदान किए जाने वाले मूल्य की संस्थागत और सरकारी मान्यता बढ़ रही है। शैक्षिक पाठ्यक्रम, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में, ऐसे पाठ्यक्रमों को एकीकृत करना शुरू कर दिया है जो आयुर्वेद, योग और वास्तु शास्त्र जैसे पारंपरिक विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुप्रयोग का मिश्रण पेश करते हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जैसे संस्थान प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच की खाई को पाटने के लिए अनुसंधान कर रहे हैं।

पारंपरिक स्वास्थ्य प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए स्थापित आयुष मंत्रालय जैसी पहल के माध्यम से सरकारी समर्थन स्पष्ट है। इसके अलावा, 'वोकल फॉर लोकल' की दिशा में भारत सरकार का जोर अप्रत्यक्ष रूप से पारंपरिक शिल्प और उद्योगों को बढ़ावा देता है, जिनमें से कई भारतीय ज्ञान प्रणाली में गहराई से निहित हैं। आयुष अस्पतालों की स्थापना और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव आईकेएस के लिए बढ़ते संस्थागत समर्थन का प्रमाण है। हालाँकि, प्रगति हुई है, मुख्यधारा की शिक्षा और नीति–निर्माण में आईकेएस का एकीकरण अभी भी एक विकासशील यात्रा है, जिसमें अधिक संरचित, व्यापक और मानकीकृत

कार्यान्वयन की आवश्यकता है।

आधुनिक एकीकरण

आधुनिक प्रौद्योगिकी और विज्ञान के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण पारंपरिक ज्ञान के पुनर्जागरण का प्रतीक है, जो इसे समकालीन जरूरतों और वैश्विक मानकों के अनुकूल बनाता है। इस एकीकरण के गवाह दो प्रमुख क्षेत्र हैं स्वास्थ्य सेवा, विशेष रूप से आयुर्वेद के माध्यम से, और वास्तुकला, वास्तु शास्त्र के माध्यम से।

स्वास्थ्य देखभाल में आयुर्वेदः

आयुर्वेद, जीवन का विज्ञान, ने न केवल पारंपरिक कल्याण क्षेत्रों में बल्कि आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं में भी अपना स्थान पाया है। फार्मास्युटिकल कंपनियां आधुनिक सुरक्षा और प्रभावकारिता मानकों को पूरा करने वाली आयुर्वेदिक दवाओं का उत्पादन करने के लिए अनुसंधान में तेजी से निवेश कर रही हैं। डिजिटल तकनीक इस पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मोबाइल एप्लिकेशन और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आयुर्वेदिक चिकित्सकों के साथ आभासी परामर्श प्रदान करते हैं, जिससे यह प्राचीन विज्ञान वैश्विक दर्शकों के लिए सुलभ हो जाता है। इसके अलावा, आधुनिक नैदानिक उपकरणों के साथ एकीकरण एक अधिक व्यापक दृष्टिकोण को सक्षम बनाता है, जो पारंपरिक पल्स निदान को आधुनिक इमेजिंग तकनीकों के साथ जोड़ता है, जिससे आयुर्वेदिक उपचार की सटीकता और प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

शैक्षणिक संस्थान आयुर्वेद में अधिक कठोर, अनुसंधान–उन्मुख पाठ्यक्रम शुरू कर रहे हैं, जिससे ऐसे चिकित्सक तैयार हो रहे हैं जो पारंपरिक तरीकों और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान दोनों में पारंगत हैं। यह दोहरा ज्ञान आधार समकालीन स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण है, जो आयुर्वेद को वैश्विक कल्याण उद्योग में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाता है।

वास्तुकला में वास्तु शास्त्रः

वास्तु शास्त्र, वास्तुकला और अंतरिक्ष का पारंपरिक भारतीय विज्ञान, पुनरुद्धार का अनुभव कर रहा है, आधुनिक निर्माण तेजी से इसके सिद्धांतों का सम्मान कर रहा है। यह केवल मुख्य दिशाओं के साथ तालमेल बिठाने के बारे में नहीं है, बल्कि प्राकृतिक पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाने वाले रहने के स्थान बनाने के बारे में भी है। समकालीन वास्तुकार ऐसी इमारतें बनाने के लिए वास्तु सिद्धांतों को आधुनिक डिजाइन के साथ मिश्रित कर रहे हैं जो न केवल सौंदर्य की दृष्टि से मनभावन हैं बल्कि टिकाऊ और ऊर्जा–कुशल भी हैं। सॉफ्टवेयर टूल और सिमुलेशन मॉडल में अब वास्तु सिद्धांतों को शामिल किया गया है, जिससे आर्किटेक्ट को आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए पारंपरिक दिशानिर्देशों का पालन करने वाली संरचनाएं डिजाइन करने की अनुमति मिलती है। रियल एस्टेट डेवलपर्स विपणन परियोजनाएं कर रहे हैं जो वास्तु अनुपालन को एक विक्रय बिंदु के रूप में पेश करते हैं, जो ब्रह्मांडीय और सांसारिक ऊर्जा के अनुरूप रहने वाले स्थानों के लिए आबादी के बीच बढ़ती मांग को दर्शाता है।

आधुनिक वास्तुकला में वास्तु का एकीकरण आवासीय भवनों से परे, कॉर्पोरेट स्थानों और सार्वजनिक बुनियादी ढांचे तक फैला हुआ है। यह न केवल सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि आधुनिक निर्माण अपने निवासियों की भलाई और उत्पादकता में सकारात्मक योगदान दें।

निष्कर्षतः, भारत में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समकालीन परिदृश्य गतिशील एकीकरण और पुनरुद्धार में से एक है। शैक्षिक, संस्थागत और सरकारी समर्थन इस पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि भारत का प्राचीन ज्ञान न केवल जीवित रहे बल्कि आधुनिक युग में भी पनपे। जैसे ही ये पारंपरिक प्रणालियाँ समकालीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ मिश्रित होती हैं, वे एक ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं जहाँ विकास केवल आर्थिक विकास के बारे में नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक संवर्धन, टिकाऊ जीवन और समग्र कल्याण के बारे में भी है।

4. विकास में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका

आर्थिक प्रभाव

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) का देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसमें पारंपरिक चिकित्सा, कृषि और शिल्प जैसे क्षेत्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेदिक उत्पादों के वैश्विक बाजार में तेजी से वृद्धि देखी जा रही है, विदेशी निवेश आकर्षित हो रहा है और निर्यात राजस्व बढ़ रहा है। आयुर्वेदिक सिद्धांतों पर आधारित पारंपरिक कृषि प्रथाएं, टिकाऊ और रसायन–मुक्त उपज की वैश्विक मांग को पूरा करते हुए, जैविक खेती का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। इसके अलावा, भारत की हस्तशिल्प और वस्त्रों की समृद्ध टेपेस्ट्री, जो स्थानीय ज्ञान और परंपराओं में गहराई से निहित है, न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बनाए रखती है बल्कि भारत को वैश्विक हस्तशिल्प बाजार में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में भी

स्थापित करती है। ऐसे उत्पादों की ब्रांडिंग, उनकी अद्वितीय सांस्कृतिक उत्पत्ति और कारीगर गुणवत्ता पर जोर देते हुए, पर्याप्त मूल्य जोड़ती है, जिससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी बाजार अपील बढ़ जाती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास

आईकेएस सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारंपरिक कलाओं, भाषाओं और रीति–रिवाजों को संरक्षित और बढ़ावा देकर, ये ज्ञान प्रणालियाँ समुदायों के बीच पहचान और निरंतरता की भावना को मजबूत करती हैं। स्थानीय ज्ञान और संस्कृति को शामिल करने वाली शैक्षिक पहल अधिक समावेशी और विविध शिक्षण वातावरण में योगदान करती हैं, जिससे सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा मिलता है। स्थानीय ज्ञान प्रणाली द्वारा समर्थित सांस्कृतिक त्यौहार और पारंपरिक मेले न केवल सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए मंच के रूप में काम करते हैं बल्कि सामुदायिक बंधन को मजबूत करते हैं और आर्थिक अवसर भी पैदा करते हैं। इसके अतिरिक्त, पंचायती राज जैसी पारंपरिक शासन प्रणाली का पुनरुद्धार, समुदाय के नेतृत्व वाले विकास और भागीदारीपूर्ण निर्णय लेने की सुविधा में आईकेएस की भूमिका को रेखांकित करता है, जिससे सामाजिक सद्भाव और सामूहिक सशक्तिकरण बढ़ता है।

स्थिरता और पर्यावरण

स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने में आईकेएस की क्षमता बहुत अधिक है। पारंपरिक कृषि तकनीकें, जैसे कि वर्षा जल संचयन और मिश्रित फसल, स्वाभाविक रूप से टिकाऊ हैं, पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करते हुए मिट्टी की उर्वरता और जैव विविधता को बढ़ाती हैं। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ आनुवंशिक विविधता और लचीलापन बनाए रखने के लिए स्थानीय ज्ञान द्वारा निर्देशित स्वदेशी बीजों और नस्लों का संरक्षण महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, वास्तु शास्त्र जैसी पारंपरिक वास्तुशिल्प प्रथाएं, प्रकृति के साथ सामंजस्य, स्थानीय सामग्रियों के उपयोग और पर्यावरण–अनुकूल निर्माण विधियों को बढ़ावा देने पर जोर देती हैं। आईकेएस का समग्र दृष्टिकोण, मनुष्य को प्रकृति के अभिन्न अंग के रूप में देखता है, एक स्थायी मानसिकता को बढ़ावा देता है, जो समकालीन पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए महत्वपूर्ण है। इन पारंपरिक पारिस्थितिक प्रथाओं को पहचानने और आधुनिक पर्यावरण प्रबंधन रणनीतियों में एकीकृत करने से अधिक टिकाऊ और प्रभावी संरक्षण प्रयास हो सकते हैं।

नवाचार और अनुसंधान

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ न केवल प्राचीन ज्ञान का भंडार हैं बल्कि नवाचार और अनुसंधान के लिए उपजाऊ आधार भी हैं। आधुनिक विज्ञान के साथ पारंपरिक ज्ञान का एकीकरण अनुसंधान के लिए नए रास्ते खोलता है, खासकर स्वास्थ्य देखभाल, सामग्री विज्ञान और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों जैसे क्षेत्रों में। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य के प्रति आयुर्वेद का समग्र दृष्टिकोण व्यक्तिगत और निवारक स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान केंद्रित करते हुए चिकित्सा अनुसंधान में नए प्रतिमानों को प्रेरित कर रहा है। इसी तरह, शहरी नियोजन और टिकाऊ वास्तुकला में वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों की खोज की जा रही है, जिससे नवीन डिजाइन समाधान सामने आ रहे हैं जो सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार दोनों हैं। सरकार और शैक्षणिक संस्थान पारंपरिक ज्ञान के मूल्य को तेजी से पहचान रहे हैं, अनुसंधान केंद्रों और पहलों में निवेश कर रहे हैं जिनका उद्देश्य इस समृद्ध विरासत का पता लगाना, सत्यापन करना और नवाचार करना है। आईकेएस का सम्मान करने और उसे शामिल करने वाले अनुसंधान वातावरण को बढ़ावा देकर, भारत एक अद्वितीय विकास पथ बना सकता है जो न केवल तकनीकी रूप से उन्नत है बल्कि इसके सांस्कृतिक लोकाचार और टिकाऊ प्रथाओं में भी गहराई से निहित है।

5. भारतीय ज्ञान प्रणाली की चुनौतियाँ और सीमाएँ

मानकीकरण और दस्तावेजीकरण

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की पूरी क्षमता का दोहन करने में एक प्राथमिक चुनौती पारंपरिक ज्ञान का मानकीकरण और दस्तावेजीकरण है। इस ज्ञान का अधिकांश भाग मौखिक रूप से या अभ्यास के माध्यम से प्रसारित होता है, जिसमें औपचारिक दस्तावेजीकरण या संरचित डेटाबेस का अभाव होता है। इससे न केवल ज्ञान को संरक्षित करना और प्रचारित करना मुश्किल हो जाता है, बल्कि औपचारिक शिक्षा और अनुसंधान ढांचे में एकीकरण के लिए इसे मान्य और मानकीकृत करने में भी चुनौतियाँ पैदा होती हैं। इन ज्ञान प्रणाली को प्रलेखित करने के प्रयास अक्सर खंडित होते हैं और मानकीकृत पद्धति का अभाव होता है, जिससे विसंगतियां होती हैं और मूल्यवान जानकारी का संभावित नुकसान होता है। व्यापक दस्तावेजीकरण प्रोटोकॉल स्थापित करना और केंद्रीकृत रिपॉजिटरी बनाना जटिल और संसाधन–गहन हो सकता है लेकिन

आईकेएस के संरक्षण और व्यवस्थित विकास के लिए आवश्यक है।

आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकरण

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा प्रणाली के साथ आईकेएस को एकीकृत करना बहुआयामी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। पारंपरिक ज्ञान प्रणाली और आधुनिक विज्ञान के बीच मौलिक रूप से भिन्न प्रतिमान और पद्धतियाँ पूर्व के बारे में गलतफहमियाँ और अवमूल्यन पैदा कर सकती हैं। इस अंतर को पाटने के लिए आईकेएस की समग्र और अनुभवात्मक प्रकृति की सराहना करने और उसे शामिल करने के लिए वैज्ञानिक समुदाय में अंतःविषय दृष्टिकोण और एक आदर्श बदलाव की आवश्यकता है। इसके अलावा, इन ज्ञान प्रणाली को औपचारिक शिक्षा पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक संतुलन की आवश्यकता होती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि पारंपरिक ज्ञान आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों के साथ टकराव के बजाय पूरक है। इस एकीकरण के लिए ऐसे शिक्षकों और शोधकर्ताओं की भी आवश्यकता है जो दोनों क्षेत्रों में निपुण हों और पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के अंतर्संबंध में प्रभावी ढंग से अनुवाद और नवाचार कर सकें।

बौद्धिक संपदा मुद्दे

पारंपरिक ज्ञान की बौद्धिक संपदा की रक्षा करना एक जटिल चुनौती है। पारंपरिक बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) ढांचे अक्सर पीढ़ियों से विकसित और परिष्कृत किए गए सांप्रदायिक ज्ञान की सुरक्षा के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं। इससे दुरुपयोग या बायोपाइरेसी हो सकती है, जहां निगम स्वदेशी समुदायों को उचित मुआवजा दिए बिना पारंपरिक ज्ञान का पेटेंट कराते हैं। इसके अतिरिक्त, औपचारिक दस्तावेजीकरण की कमी और पारंपरिक ज्ञान की सामुदायिक प्रकृति के कारण मानक आईपीआर मानदंडों के अनुसार स्वामित्व या लेखकत्व स्थापित करना मुश्किल हो जाता है। एक कानूनी ढांचा विकसित करना जो समुदायों के पारंपरिक ज्ञान पर सामूहिक बौद्धिक अधिकारों को मान्यता देता है और उनकी रक्षा करता है, महत्वपूर्ण है। इस तरह के ढांचे को न केवल शोषण को रोकना चाहिए बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि पारंपरिक ज्ञान से प्राप्त लाभ संरक्षक समुदायों के साथ समान रूप से सांझा किए जाएं।

6. भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण और संवर्धन के लिए रणनीतियाँ

नीति सिफारिशों

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) को प्रभावी ढंग से संरक्षित, बढ़ावा देने और एकीकृत करने के लिए व्यापक नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं। सरकारों को आईकेएस के दस्तावेजीकरण, संरक्षण और प्रचार पर ध्यान केंद्रित करने वाले समर्पित मंत्रालयों या विभागों की स्थापना पर विचार करना चाहिए। ये निकाय पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण के लिए मानकीकृत प्रोटोकॉल बनाने और विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक पाठ्यक्रम में इसके एकीकरण को सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर सकते हैं। इसके अलावा, नीतियों को आईकेएस को समर्पित अनुसंधान केंद्रों की स्थापना को प्रोत्साहित करना चाहिए, एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देना चाहिए जहां पारंपरिक ज्ञान को न केवल संरक्षित किया जाए बल्कि उसमें नवाचार भी किया जाए। आईकेएस के क्षेत्र में काम करने वाले संगठनों और संस्थानों को अनुदान और सब्सिडी जैसे वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान किए जा सकते हैं। इसके अलावा, सरकार को मजबूत बौद्धिक संपदा ढांचे को लागू करना चाहिए जो निष्पक्ष और न्यायसंगत लाभ–बंटवारे को सुनिश्चित करते हुए सांप्रदायिक ज्ञान को पहचानें और संरक्षित करें।

समुदाय की भागीदारी

आईकेएस के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में सामुदायिक भागीदारी सर्वोपरि है। स्वदेशी समुदाय पारंपरिक ज्ञान के संरक्षक हैं, और इसके सटीक दस्तावेजीकरण और टिकाऊ उपयोग के लिए उनकी सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। नीतियों को इन समुदायों को सशक्त बनाने के लिए डिजाइन किया जाना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके पास अपना ज्ञान साझा करने के लिए संसाधन और मंच हों। समुदाय के नेतृत्व वाली पहल, जैसे स्थानीय ज्ञान केंद्र या डिजिटल कहानी कहने वाले मंच, मौखिक परंपराओं और प्रथाओं को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पारंपरिक ज्ञान के मूल्य के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से शैक्षिक कार्यक्रम युवा पीढ़ी के बीच सम्मान और रुचि को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे इन ज्ञान प्रणाली की निरंतरता सुनिश्चित हो सकती है। इसके अलावा, पारंपरिक ज्ञान के उपयोग और प्रबंधन से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में समुदाय के सदस्यों को शामिल करने से यह सुनिश्चित होता है कि विकास की पहल स्थानीय जरूरतों और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ जुड़ी हुई है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

भारत अपनी ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने और दूसरों के अनुभवों से सीखने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से

महत्वपूर्ण लाभ उठा सकता है। अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान, अनुसंधान साझेदारी और सहयोगी परियोजनाओं में शामिल होने से आईकेएस के संरक्षण और नवाचार के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और संसाधन उपलब्ध हो सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंच और सम्मेलन भारत के लिए पारंपरिक ज्ञान की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने और स्वदेशी ज्ञान को पहचानने और उसकी रक्षा करने वाली वैश्विक नीतियों की वकालत करने के लिए मंच के रूप में काम कर सकते हैं। इस तरह के सहयोग से पारंपरिक ज्ञान पर आधारित उत्पादों के लिए नए बाजार खुल सकते हैं, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिल सकता है। इसके अलावा, अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय साझेदारी से स्वास्थ्य देखभाल, स्थिरता और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान की ताकत के संयोजन से विचारों का परस्पर–निषेचन हो सकता है। यह न केवल भारत की ज्ञान प्रणाली के वैश्विक कद को बढ़ाता है बल्कि टिकाऊ और समावेशी वैश्विक विकास की दिशा में सामूहिक प्रयासों में भी योगदान देता है।

निष्कर्ष:

अंत में, भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत के प्रमाण के रूप में खड़ी है, जो ज्ञान का भंडार प्रदान करती है जो विकसित भारत को आकार देने में महत्वपूर्ण है। आर्थिक विकास, सामाजिक एकजुटता, पर्यावरणीय स्थिरता और नवाचार तक फैला आईकेएस का बहुमुखी प्रभाव, व्यापक राष्ट्रीय विकास के लिए आधारशिला के रूप में इसकी क्षमता को रेखांकित करता है। हालाँकि, इस क्षमता को साकार करने के लिए मानकीकरण, एकीकरण और बौद्धिक संपदा अधिकारों से संबंधित चुनौतियों पर काबू पाने के लिए ठोस प्रयास की आवश्यकता है। एक सहयोगी वातावरण को बढ़ावा देकर जो सामुदायिक भागीदारी, नीति समर्थन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करता है, भारत अपनी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का प्रभावी ढंग से लाभ उठा सकता है। ये प्रणालियाँ, अपने अंतर्निहित ज्ञान और अनुकूलनशीलता के साथ, भारत को एक अद्वितीय विकास पथ पर मार्गदर्शन कर सकती हैं, जो एक स्थायी और समृद्ध भविष्य के वादों के साथ अपने अतीत की समृद्धि का सामंजस्य स्थापित कर सकती हैं।

सन्दर्भ:

1. भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ
2. भारतीय ज्ञान प्रणाली खंड 1